राधा कमल मुकर्जी : मूल्यों की सामाजिक संरचना B33 ①

RADHA KAMAL MUKERJEE तथा सामाजिक परिस्थितिकी

राधा कमल मुकर्जी ने भारत में समाजशास्त्र और भारतीय सामाजिक विचार धारा के विकास में महत्वपूर्ण योग दिया है। इनका जन्म 7 दिसम्बर सन् 1889 को बरहामपुर (प० बंगाल) में हुआ था। आपके पिता श्री गोपाल चन्द्र मुकर्जी एक विख्यात वकील थे, आपकी शिक्षा प्रेसीडेंसी कालेज कलकत्ता में हुई 1910 में मुकर्जी बरहामपुर के कृष्णनाथ कालेज में अर्थशास्त्र के प्राध्यापक बन गये जहां वे पांच वर्ष तक रहे, इस अवधि में उन्होंने अर्थशास्त्र से सम्बन्धित अनेक शोध कार्य भी किये जिनके परिणामों को उन्होंने 1916 में अपनी प्रथम कृति "भारतीय अर्थव्यवस्था के आधार" में छपवाये सन् 1915 में मुकर्जी को बंगाल में सहकारिता आन्दोलन पर सामाजिक सर्वेक्षण एवं शोध कार्य के लिए प्रेमचन्द्र रामचन्द्र छात्रवृत्ति प्रदान की गयी सन् 1916 में मुकर्जी लाहौर के सनातन धर्म कालेज के प्राचार्य बनाये गये अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र एवं राजनीति, दर्शनशास्त्र को पढ़ाते रहे,

मूल्यों की सामाजिक संरचना Social Structure of Values

मुकर्जी सम्पूर्ण सामाजिक संगठन और व्यवस्था का आधार मूल्यों को मानते हैं। वे मूल्यों, व्यक्ति और समाज को परस्पर सम्बन्धित मानते हैं, उनका मत है कि पारस्परिक आदान-प्रदान से ही व्यक्ति पूर्ण बनता है। व्यक्ति ऐसी स्थिति में समाज से पृथक केवल अंश नहीं रह जाता वरन वह अंश के साथ-2 ही समग्र भी होता है। व्यक्ति मूल्यों का उद्गम स्रोत ही नहीं है वरन वह मूल्य-निर्णय भी करता है, जो कि समूहों और संस्थाओं की सामान्य कार्य-प्रणाली में अन्तवैयक्तिक अपेक्षाओं, सम्बन्धों और व्यवहारों में समाहित हैं। "मूल्य समाज द्वारा मान्यता प्राप्त इच्छाएं तथा लक्ष्य हैं जिनका आन्तरीकरण सीखने या समाजीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से होता है। और जो प्राकृतिक अधिमान्यताएं मानक तथा अभिलाषाएं बन जाते हैं।"

जानसन – "मूल्यों को एक मानक के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, जो कि सांस्कृतिक हो सकता है या केवल व्यक्तिगत और जिसके द्वारा वस्तुओं की एक साथ तुलना की जाती है, और वे एक दूसरे के सन्दर्भ में स्वीकार या अस्वीकार की जाती हैं वांछित या अवांछित, अच्छी या बुरी, अधिक या कम उचित मानी जाती है।"

जानसन का मत है कि मूल्यों के द्वारा सभी प्रकार की वस्तु, भावना, विचार क्रिया, गुण, पदार्थ, व्यक्ति, समूह, लक्ष्य एवं साधन आदि का मूल्यांकन किया जाता है। इन परिभाषाओं से स्पष्ट है कि सामाजिक मूल्य वे मानक या धारणाएं हैं जिनके आधार पर हम किसी व्यक्ति के व्यवहार, वस्तु के गुण, लक्षण, साधन एवं भावनाओं आदि को उचित या अनुचित, अच्छा या बुरा ठहराते हैं। मूल्य एक प्रकार से सामाजिक माप या पैमाना है जिसके आधार पर किसी वस्तु का मूल्यांकन किया जाता है, इन मूल्यों को व्यक्ति समाजीकरण की प्रक्रिया द्वारा सीखता है और आन्तरीकृत करता है, तथा उन्हीं के अनुरूप आचरण करने की सोचता है। सामाजिक मूल्यों को

(२) प्राप्त करना व्यक्ति की इच्छा बन जाती है। सामाजिक मूल्यों का निर्माण सम्पूर्ण समूह एवं समाज के सदस्यों की पारस्परिक अन्तःक्रिया के दौरान होता है। अतः ये जो समूह या समाज की वस्तु है समाज एवं संस्कृति में भिन्नता के कारण ही सामाजिक मूल्यों में भी भिन्नता पायी जाती है।

सामाजिक मूल्यों की विशेषताएं

① सामाजिक मूल्य सामूहिक होते हैं, ② सामाजिक मूल्य सामाजिक मापक है ③ सामाजिक मूल्यों के बारे में एक रूपता पायी जाती है; ④ सामाजिक मूल्य गतिशील होते हैं। ⑤ सामाजिक मूल्यों में विभिन्नता पायी जाती है।

मूल्यों के नियम (Laws of Values)

① समाज के नियन्त्रण एवं समर्थन के कारण मानवीय प्रेरणाए मूल्यों में परिवर्तित हो जाती है।
② मूल्यों की परस्पर अन्तःक्रिया के कारण वे परस्पर घुलमिल जाते हैं वे अनेक प्रकार के सम्मिलन को उत्पन्न करते हैं।
③ मूल्यों में संघर्ष होने पर व्यक्ति अपनी शिक्षा, अनुभव एवं आदर्श नियमों के आधार पर उपयुक्त मूल्यों का चुनाव करता है।
④ समाज या संस्कृति मानवीय मूल्यों को मौलिक प्रतिमान प्रदान करते हैं।
⑤ सामाजिक पर्यावरण, समूह, संस्था आदि में परिवर्तन के साथ-2 मानवीय मूल्यों में भी परिवर्तन होते हैं।

मूल्यों का वर्गीकरण (classification of values)

① सावयवी मूल्य - इस प्रकार के मूल्यों का संबंध आग, पानी एवं भार आदि से है।
② विशिष्ट मूल्य - प्रत्येक व्यक्ति की अपनी व्यक्तिगत विशेषताएं, रुचि एवं विचार होते हैं; उन्ही के आधार पर वह किसी वस्तु का मूल्यांकन करता है. जैसे- विधवा, पुनर्विवाह एवं बाल-विवाह
③ सामाजिक मूल्य - कुछ मूल्यों का सम्बन्ध सामाजिक जीवन से होता है सामाजिक व्यवहार, परम्पराओं, एवं आदतों के सम्बन्ध में प्रत्येक समाज में कुछ मूल्य पाये जाते हैं।
④ सांस्कृतिक मूल्य - इनका सम्बन्ध संस्कृति से होता है इसमें उपकरणों प्रतीकों सत्य, सुन्दरता एवं उपयोगिता आदि से सम्बन्धित ही मूल्य आते हैं।

सामाजिक मूल्यों का महत्व

① समाज में एकरूपता उत्पन्न करते हैं ② व्यक्ति के लिए महत्व ③ सामाजिक संगठन एवं एकीकरण ④ सामाजिक क्षमता का मूल्यांकन ⑤ भौतिक संस्कृति का महत्व बढाते हैं। ⑥ सामाजिक नियन्त्रण।

सामाजिक पारिस्थितिकी (social ecology)

मानव सम्बन्धो के अध्ययन के लिए मानव प्रदेश ही उचित इकाई है; क्योंकि एक प्रदेश विशेष में हम एक-दूसरे के साथ अन्तःक्रिया करने वाले संस्कृति के धारक मानव समूहो तथा पौधे, पशु एवं अन्य निर्जीव पर्यावरण के बीच पाये जाने वाले जटिल अन्तसम्बन्धों को अच्छी तरह समझ सकते हैं। सम्भवतः मानवीय सामाजिक व्यवहारो, सामाजिक संस्थाओ तथा

अनुकूलन की मानवीय संस्थाओं को प्रादेशिक संकुल से अलग करके इसी तरह समझा नहीं जा सकता। यह दो प्रकार की होती है।

(i) व्यवहारिक पारिस्थितिकी :- इसके अन्तर्गत जनसंख्या प्राकृतिक साधनों वनस्पति एवं पशु जगत के पारिस्थितिगत सन्तुलन के साथ सामंजस्य करते हुए मानव के विभिन्न विकास स्वरूपों का अध्ययन आता है।

(ii) इसके अन्तर्गत मानव भूगोल, मानव जीवशास्त्र, अर्थशास्त्र, समाज मनोविज्ञान तथा तकनीकी के साथ पारिस्थिति विज्ञान की अन्त: क्रिया के कारण प्राप्त अन्त: वैज्ञानिक दृष्टिकोण आता है। इसके शब्दों में इन विज्ञानों के अन्तर्गत प्राप्त निष्कर्षों के सम्मिलित उपयोग को ध्यान में रखते हुए पारिस्थितिगत ज्ञान को ही समुदाय - पारिस्थितिकी कहते हैं।

डी०पी० मुकर्जी : सांस्कृतिक विविधताएं एवं आधुनिकीकरण

इनका पूरा नाम धुर्जटि प्रसाद मुकर्जी है। इन्होंने न केवल समाजशास्त्र के क्षेत्र में ही वरन अर्थशास्त्र, साहित्य, संगीत व कला के क्षेत्र में भी अपना कीर्तिमान स्थापित किया। आपका जन्म 1894 में बंगाल में एक मध्यवर्गीय ब्राह्मण परिवार में हुआ था। प्रो० डी०पी० मुकर्जी राधाकमल मुकर्जी के समकालीन थे। डी० पी० मुकर्जी एक प्रबुद्ध और मौलिक विचारक थे। इनकी साहित्य रचनाएं - व्यक्तित्व और सामाजिक विज्ञान, आधुनिक भारतीय संस्कृति, भारतीय संगीत का परिचय आदि। इनका मुख्य लक्ष्य ज्ञान की साधना करना, सत्य की खोज करना तथा वस्तुनिष्ठ और मौलिक अनुसंधान करना था। वे ज्ञान को व्यक्तित्व के विकास का मुख्य साधन मानते हैं। आज ज्ञान का विभाजन हो गया है वह कई शाखाओं और उपशाखाओं में बट गया है। वे कहते हैं कि ज्ञान केवल तथ्य - प्रदर्शन नहीं बल्कि तथ्यात्मक सामग्री और वैज्ञानिक पद्धति पर आधारित दर्शन है। भारतीय परम्परा एवं आधुनिकता मुकर्जी ने परम्पराओं में परिवर्तन के तीन स्रोत बताये हैं। श्रुति, स्मृति, और अनुभव आदि।

आन्द्रे बिताई : सामाजिक स्तरीकरण

जिसबर्ट - "सामाजिक स्तरीकरण समाज का उन स्थायी समूहों अथवा श्रेणियों में विभाजन है जो आपस में श्रेष्ठता एवं अधीनता के संबंधों द्वारा सम्बद्ध होता है।"

रेमण्ड मरे - "स्तरीकरण उच्चतर एवं निम्नतर सामाजिक इकाइयों में समाज का क्षैतिज विभाजन है।"

सामाजिक स्तरीकरण के आधार

(i) प्राणिशास्त्रीय आधार
(a) लिंग / आयु / प्रजाति / जन्म

(i) आर्थिक आधार
(2) धार्मिक आधार
(3) राजनैतिक आधार।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया
23/09/2020